वैज्ञानिकों की बैठक, रसायनों पर निर्भरता घटाकर गुणवत्तापूर्ण उत्पादन पर जोर

फल, सब्जी व मसाला फसलों के लिए बनेगा समेकित कीट प्रबंधन मॉड्यूल

सिटी रिपोर्टर | बीकानेर

टिकाऊ एवं पर्यावरण-अनुकूल खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से गुरुवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू) में वैज्ञानिकों और उद्यानिकी विभाग के अधिकारियों की बैठक आयोजित हुई। बैठक में फल, सब्जी एवं मसाला फसलों के लिए फसल-विशिष्ट समेकित कीट प्रबंधन (आईपीएम) मॉड्यूल विकसित करने पर विस्तार से चर्चा की गई।

अनुसंधान निदेशक डॉ.एनके शर्मा ने कहा कि रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता कम करने के लिए फसल-विशिष्ट आईपीएम मॉड्यूल विकसित करना समय की आवश्यकता है। इसके लिए विशेष शोध परियोजना शुरू कर किसानों को पर्यावरण-अनुकूल और प्रभावी कीट एवं रोग प्रबंधन तकनीक उपलब्ध कराई जानी चाहिए। सहायक निदेशक उद्यानिकी मुकेश गहलोत ने विभाग और वैज्ञानिकों के समन्वय से आधुनिक तकनीक किसानों तक पहुंचाने पर जोर दिया। बैठक में विशेषज्ञों ने प्राकृतिक मित्र कीटों के संरक्षण, जैव उर्वरकों, जैविक खाद, संतुलित उर्वरक, ड्रिप एवं मिनी स्प्रिंकलर सिंचाई, प्लास्टिक मल्च, स्वस्थ पौध सामग्री तथा नीम आधारित उत्पादों के उपयोग की सिफारिश की। डॉ.एचएल देशवाल ने कहा कि उर्वरकों का अंधाधुंध उपयोग फसल की गुणवत्ता और किसानों की आय दोनों को प्रभावित करता है। इसलिए फसल-विशिष्ट अनुसंधान और वैज्ञानिक प्रबंधन आवश्यक है।

जिले में हर साल बढ़ रहा फल, सब्जी और मसाला की फसलों का रकबा

सहायक निदेशक उद्यानिकी मुकेश गहलोत बताया कि जिले में 800 हैक्टेयर क्षेत्रफल में अनार, 350 हैक्टेयर में खजूर, 170 हैक्टेयर में नींबू वर्गीय फल, 125 हैक्टेयर क्षेत्रफल में बेर इत्यादि फल बगीचा स्थापित है। 3 हज़ार 650 हेक्टेयर क्षेत्रफल में प्याज एवं 4 हज़ार हेक्टेयर से अधिक क्षेत्रफल में सब्जियों की खेती हो रही है। मसाला वर्गीय फसलों की 30 हजार हैक्टेयर से अधिक क्षेत्रफल में खेती हो रही है। उद्यानिकी विस्तार क्षेत्रफल को ध्यान में रखते हुए समन्वित कीट एवं व्याधि नियंत्रण मोड्यूल अपनाकर किसान प्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित होंगे तथा निर्यात को भी बढ़ावा मिलेगा।

एसकेआरएयू: फल, सब्जी एवं मसाला फसलों के लिए आईपीएम मॉड्यूल तैयार करने हेतु वैज्ञानिकों ने की चर्चा, फसल-विशिष्ट समेकित कीट प्रबंधन मॉड्यूल विकसित करने होंगे

ओम एक्सप्रेस

बीकानेर। फल, सब्जी एवं मसाला फसलों की रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता कम करते हुए गुणवत्तापूर्ण उत्पादन के लिए समेकित कीट प्रबंधन (आईपीएम) मॉड्यूल तैयार करने हेतु गुरुवार को एसकेआरएयू में वैज्ञानिकों ने विस्तार से चर्चा की। टिकाऊ एवं पर्यावरण-अनुकूल खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित इस चर्चा में कृषि एवं बागवानी विभाग के अधिकारी तथा कृषि वैज्ञानिक शामिल हुए। एसकेआरएयू के अनुसंधान निदेशक डॉ एन के शर्मा ने कहा कि फल, सब्जी एवं मसाला फसलों में रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग को संतुलित करने के लिए फसल-विशिष्ट आईपीएम मॉड्यूल विकसित करने होंगे, इसके लिए विस्तृत शोध की आवश्यकता हैं। उन्होंने कहा कि विभाग द्वारा एक विशेष शोध परियोजना स्वीकृत हो, जिसके माध्यम से किसानों को सटीक एवं प्रभावी पर्यावरण-अनुकूल कीट व्याधि प्रबंधन तकनीक उपलब्ध करवाई जा सकेगी, तथा सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा।

सहायक निदेशक उद्यानिकी मुकेश गहलोत ने कहा कि किसानों के कल्याण हेतु विभाग तथा वैज्ञानिकों को समन्वित प्रयास करने होंगे ताकि सटीक तकनीकी जानकारी सीधे किसान तक पहुंचे। बैठक में विशेषज्ञों ने कहा कि खेतों में रसायनिक उर्वरकों पर निर्भरता नियंत्रित रखने के लिए फसलों के प्राकृतिक मित्र कीटों एवं परजीवी जीवों के संरक्षण और संवर्धन पर ध्यान देने की जरुरत है । साथ ही राइजोबियम, एजेटोबैक्टर जैसे जैव उर्वरकों, अच्छी तरह सड़ी हुई जैविक खाद एवं संतुलित उर्वरकों के साथ सूक्ष्म पोषक तत्वों के प्रयोग की अनुशंसा की गई। फसल की आवश्यकता के अनुसार ड्रिप एवं मिनी स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली अपनाने, जैविक अथवा प्लास्टिक मल्च का उपयोग, प्रमाणित नर्सरियों से स्वस्थ पौध सामग्री लेने तथा मई-जून में सिंचित खेतों को 50 माइक्रोन मोटाई की प्लास्टिक शीट से 4-6 सप्ताह तक ढककर मृदा उपचार करने की सलाह दी गई। फलों की सुरक्षा के लिए बायोडिग्रेडेबल अथवा नॉन-वोवन बैग का उपयोग तथा नीम आधारित उत्पादों के प्रयोग की भी अनुशंसा की गई। डॉ एच एल देशवाल ने कहा कि उर्वरकों का अंधाधुंध प्रयोग फ़सल गुणवत्ता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है साथ ही इससे किसानों को आर्थिक नुकसान होता है। ऐसे में फ़सल विशेष पर आधारित अनुसंधान सटीक परिणाम दे सकेंगे। गहलोत ने बताया कि जिले में 800 हैक्टेयर क्षेत्रफल में अनार, 350 हैक्टेयर में खजूर, 170 हैक्टेयर में नींबू वर्गीय फल, 125 हैक्टेयर क्षेत्रफल में बेर इत्यादि फल बगीचा स्थापित है।

टिकाऊ खेती की ओर कदम

फसल-विशिष्ट शोध परियोजना शुरू करने का सुझाव

फल-सब्जी व मसाला फसलों के लिए तैयार होगा आईपीएम मॉडल

एसकेआरएयू में वैज्ञानिकों और अधिकारियों की बैठक

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बैठक में मंथन करते वैज्ञानिक एवं कृषि अधिकारी।

बीकानेर. फल, सब्जी और मसाला फसलों में रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों पर निर्भरता कम कर सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण उत्पादन बढ़ाने की दिशा में समेकित कीट प्रबंधन (आईपीएम) मॉड्यूल तैयार करने की पहल शुरू हो गई है। इसी उद्देश्य से गुरुवार को स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू) में वैज्ञानिकों और कृषि अधिकारियों ने विस्तृत मंथन कर सुझाव दिए।

सुरक्षित व गुणवत्तापूर्ण उत्पादन को मिलेगा बढ़ावा

टिकाऊ और पर्यावरण-अनुकूल खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से आयोजित बैठक में अनुसंधान निदेशक डॉ. एन.के. शर्मा ने कहा कि फल, सब्जी एवं मसाला फसलों के लिए फसल-विशिष्ट आईपीएम मॉड्यूल विकसित करना समय की आवश्यकता है। इसके लिए व्यापक शोध कर ऐसी तकनीक विकसित करनी होगी, जिससे रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग को संतुलित किया जा सके। उन्होंने विशेष शोध परियोजना स्वीकृत कराने का सुझाव देते हुए कहा कि इसके माध्यम से किसानों को कीट एवं रोग प्रबंधन तकनीक उपलब्ध कराई जा सकेगी। इससे सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण उत्पादन को भी बढ़ावा मिलेगा।

महाप्रबंधक निदेशक (उद्यानिकी) मुकेश महलोत ने कहा कि किसानों के हित में कृषि विभाग और वैज्ञानिकों को समन्वित प्रयास करने होंगे, ताकि आधुनिक तकनीकी जानकारी सीधे खेत तक पहुंचे और उसका लाभ किसानों को मिल सके। बैठक में विशेषज्ञों ने रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता कम करने के लिए प्राकृतिक मित्र कीटों और परजीवी जीवों के संरक्षण एवं संवर्धन पर विशेष जोर दिया। उनका मानना था कि जैविक एवं समेकित कीट प्रबंधन तकनीकों को बढ़ावा देकर टिकाऊ खेती को मजबूत बनाया जा सकता है।